

पद २८६

(राग: पंचम - ताल:(क्रम) चौताल, सुरफाकता, त्रिताल, झंपा)

बन्सी धून सरस राय कोमल लय मधुरी गान खेलत सुरंग फाग
नंदनंदन जमुनातीरवासी ॥ध्रु.॥ गावे गारी दे दे तारी सब ब्रजनारी
रंग पिचकारी भरभर मारी । भिजे सब विमल चीर ॥१॥ मानिक
सुरसावत सावसे संग सुहाय मोटी छोटी गुलाबदानी चपल नयन
भर अबिर होरी । स्त्री शाम शामर चंडोल डंकार सुन देव आकाश
छाये । मानिक अति गुनगंभीर ॥२॥